अध्याय 45

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	**आराधना** (20 मिनट)	*[स्वभाव का प्रगटीकरण]*
		परमेश्वर की महिमा के लिए जीना

इस अध्याय में हम परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन बिताने के द्वारा अपनी आराधना को प्रगट करना सीखेगें।

1. एक मसीही की जीवन शैली।

भजन संहिता 15:1-5 **पढ़ें।**

चर्चा करें। मसीही जीवन शैली की क्या विशेषताएं होती हैं?

ध्यान दें।

उसका व्यवहार। मसीही चलन या व्यवहार निष्कलंक होता है। वह केवल उचित काम ही करता है।

उसकी बातें। वह अपने हृदय की गहराई से सत्य बोलता है। उसकी ईमानदारी को लेकर कोई सन्देह नहीं होता।

उसके पड़ोसी से उसका सम्बन्ध। वह अपने पड़ोसी के साथ कोई बुरा काम नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की बुराई या बदनामी नहीं करता।

बुरे लोगों के साथ उसका रिश्ता। वह दुष्ट लोगों को तुच्छ जानता है,अर्थात वह उनके गलत कार्यों को अस्वीकार करता है और उनको नहीं सराहता और न ही उनके गलत कामों के लिए उनका आदर करता है। लेकिन वह उनसे नफरत नहीं करता(लूका 6:27-28)

विश्वासियों के साथ उसका सम्बन्ध। वह परमेश्वर का भय मानने वाले व लगातार दुष्टता न करने वाले जन का आदर करता है।

उसके वायदे। वह जल्दबाजी में किये गये वायदों को छोड़कर, जिसमें वह जल्द ही सुधार कर लेता है, अपने सारे वायदों को पूरा करता है। (नीतिवचन 6:1-5)

जरूरतमन्द लोगों के साथ उसका सम्बन्ध। वह बिना ब्याज़ मांगे लोगों की सहायता करता है।

उसका धर्म। वह घूस देता है, परन्तु लेता नहीं है।

किस प्रकार की जीवन शैली के लिए आप अपना जीवन समर्पित करेगें? आप परमेश्वर की महिमा के लिए वर्तमान में किस प्रकार की जीवन शैली का अभ्यास कर रहे हैं?

2. परमेश्वर की प्रतिज्ञा।

जो मसीही जन, भजन 15 के हिसाब से जीवन व्यतीत करता है वह उसकी उपस्थिति में ठिकाना पाएगा(भजन 15:1)

वे अपने जीवन में किसी भी व्यक्ति या परिस्थिति के कारण न डगमगाएगा(भजन 15:5)

3. एक मसीही अगुवे की जीवन शैली।

1तीमुथीयुस 4:12-16 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। एक मसीही अगुवे ही क्या विशेषताएं होनी चाहिए?

ध्यान दें।

उसकी उम्र उसे अगुवा(एक पुरनिया) होने से अयोग्य नहीं ठहराती।

वह दूसरे मसीहियों के लिए एक आदर्श होता है।(1पतरस 5:2-3)

वह बाइबल का अध्ययन करने व बाइबल की शिक्षा देने के लिए अपने समय,शक्ति व योग्यताओं को समर्पित करता है।

वह परमेश्वर द्वारा दिये गये आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल करता है।

वह कभी उन्नति करना बन्द नहीं करता

वह अपने जीवन व अपनी शिक्षाओं को निरन्तर मूल्यांकन करता है।

आराधना। आगे बढ़कर परमेश्वर की उसकी विशेषताओं के आधार पर आराधना करता है जो परमेश्वर को महिमा देने वाली जीवन शैली की मांग करती हैं। एक या दो वाक्यों में परमेश्वर की आराधना करें।

3.	**बाँटना** (20 मिनट)	***[एकान्त समय]*** **अय्यूब 1,2,12,14**

- ***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यहोशू 1-4)से क्या सीखा।
- अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70मिनट)	***[पवित्र आत्मा]*** **पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाना और परिपूर्ण होना**

मैनुएल 2 अध्याय 21 में हमने पवित्र आत्मा के स्वभाव,लोगों में उसके काम व कलीसिया में उसके कामों के बारे में सिखाया था। मैलुएल 4, अध्याय 45 में हम पवित्र आत्मा के कुछ विशेष कार्यों के बारे में सीखेगें: पवित्र आत्मा के बपतिस्ता, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होन, तथा पवित्र आत्मा के वरदानों के बारे में।

मैनुएल 7, अध्याय 35 में हम पवित्र आत्मा के आत्मिक वरदानों के बारे में पढ़ेगें।

क.पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

1. 'पवित्र आत्मा का बपतिस्मा' की अभिव्यक्ति ।

(1)बाइबल में अभिव्यक्ति

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, यह अभिव्यक्ति नये नियम में केवल सात बार सामने आती है (मत्ती 3:10-12; मरकुस 1:8; लूका 3:16;प्रेरितों के काम 1:5; प्रेरितों 11:14-18 व 1 कुरिन्थियों 12:12-13)। सातों बार इसका परिणाम नया जन्म था, अर्थात किसी के भीतर मसीही जीवन का आरम्भ होना। मत्ती 3:10-12 में पवित्र आत्मा का सम्बन्ध स्पष्ट तौर पर परमेश्वर के राज्य में लोगों को इकट्ठा करने से है, जबकि आग के साथ बपतिस्मा का सम्बन्ध अविश्वासियों के अन्तिम न्याय से है।

(2) भविष्यद्वाणियां और उनका पूरा होना।

पुराने नियम में पहले ही पवित्र आत्मा की भविष्यवाणी कर दी गयी थी(यहेजकेल 36:25-27; योएल 2:28-32)

पवित्र आत्मा की भविष्यवाणी को पूरा होना

- प्रेरितों के काम 2:1-4 में पहली बार यीशु मसीह के चेलों ने पवित्र आत्मा पाया
- प्रेरितों 2:37-41(प्रेरितों 1:8क) पहली बार यहूदी विश्वासियों ने पवित्र आत्मा पाया।
- प्रेरितों 8:12-17(प्रेरितों 1:8ख) में पहली बार किसी सामरी ने पवित्र आत्मा पाया।
- प्रेरितों 10:34-48(प्रेरितों 1:8;11:14; 15-11) में अन्यजातियों में से पहले व्यक्ति ने पवित्र आत्मा पाया।

यहूदियों में कलीसिया की नींव पड़ने के बाद, आधे-यहूदी(सामरी लोग) व गैर यहूदी (अन्यजातियां), और जितनों ने सुसमाचार सुना और यीशु मसीह में विश्वास किया,

- पवित्र आत्मा पाया (प्रेरितों 2:38-39) जिसका अर्थ है
- पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाया(1 कुरिन्थियों 12:12-13) या
- पवित्र आत्मा के द्वारा मुहर लगाया गया(इफिसियों 1:13-14)या
- पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पाया (तीतुस 3:5-7)

पवित्र आत्मा को प्राप्त करने की ये ही कुछ अभिव्यक्तियां हैं

2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने का अर्थ।

बाइबल में पवित्र पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने को बहुत सी अभिव्यक्तियों द्वारा प्रगट किया गया है।

- जिन लोगों ने विश्वास किया उन पर पवित्र आत्मा *उण्डेला गया* (प्रेरितों 2:17,33;10:45; तीतुस 3:6)
- जिन लोगों ने विश्वास किया उन पर पवित्र आत्मा *उतर आया* (प्रेरितों 10:44;11:15)
- जिन लोगों ने विश्वास किया उनको पवित्र आत्मा *दिया गया*(प्रेरितों 11:17; 15:8)
- जिन लोगों ने विश्वास किया उन्होंने पवित्र आत्मा *पाया*(प्रेरितों 10:47)
- इसे पवित्र आत्मा का "*बपतिस्पा* "कहा गया(प्रेरितों 11:16)
- इसे पवित्र आत्मा द्वारा "*मुहर लगाना* "भी कहा गया।(इफिसियों 1:13;2 कुरिन्थियों 1:21-22)
- यीशु मसीही ने इसे 'स्वर्ग की ओर से जन्म पाना' या 'पुन: जन्म पाना कहा' (यूहन्ना 3:3-8)

इन सारी अभिव्यक्तियों का अर्थ एक ही है।

(1) पवित्र आत्मा के बपतिस्में का अर्थ पवित्र आत्मा प्राप्त करना हुआ,
जिसके द्वारा कोई व्यक्ति नया जन्म या उद्धार प्राप्त करता है।

जब पहली बार अन्यजाति में स किसी ने सुसमाचार सुनकर यीशु मसीह पर विश्वास किया(ई.प. 40 में), तो पवित्र आत्मा ठीक उसी रीति से उन पर उतरा जिस प्रकार से वह यहूदियों में से प्रथम चेलों पर उतरा था(ई.प. 30 में)। परमेश्वर ने उन्हें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का वरदान दिया और इस घटना को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहा गया (प्रेरितों 11:15-17)।

यहूदियों को पिन्तेकूस्त 30 ई.प. हुआ था। प्रथम आधे यहूदियों का (सामरियों) को पिन्तेकूस्त 33/34 में हुआ था। अन्यजातियों के लिए पिन्तेकुस्त का दिन 40 ई.प आया। जिसका परिणाम यह हुआ कि जिन गैर मसीहियों ने यीशु मसीह पर विश्वास किया उन्होने भी ठीक उसी प्रकार से उद्धार पाया जिस प्रकार से यीशु पर विश्वास करने वाले यहूदियों ने बपतिस्मा पाया था(प्रेरितों 2:18,21; 11:14; 15:11; रोमियों 10:12-13; इफिसियों 1:13)। जब उन्होने आत्मा के द्वारा बपतिस्मा प्राप्त किया तब परमेश्वर ने उन्हें मन फिराव की आशीष दी(प्रेरितों 11:18) और परमेश्वर ने उनके हृदय को शुद्ध कर दिया(प्रेरितों 15:9)। ये बाइबल आधारित अभिव्यक्तियां हैं जो नये जन्म या उद्धार को प्रगट करती हैं।

उस समय से काफी पहले यीशु ने उन लोगों को सिखाया था, जिन्होने उस पर विश्वास करके, पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म(यूहन्ना 1:12-13;3:3-8),अनन्त जीवन (यूहन्ना 3:16) पाया और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया(यूहन्ना 3:3-8)। ठीक इसी प्रकार से उस समय के काफी बाद में पौलुस ने सिखाया कि पवित्र आत्मा उन लोगों को उद्धार देता है जो नये जन्म के स्नान और नये होने के द्वारा परमेश्वर पर विश्वास करते हैं।(तीतुस 3:3-8)।

(2)आत्मा के द्वारा बपतिस्में को अर्थ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करना है,
जिसके द्वारा कोई व्यक्ति मसीह व उसकी कलीसिया से सम्बन्ध स्थापित करने लगता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा कि यीशु मसीही लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देगा और लोगों को ऐसे इकट्ठा करेगा जैसे कोई गेहूं का खलिहान में इकट्ठा करता है(मत्ति 3:11-12)। पौलुस पिन्तेकुस्त के 26 वर्षों के बाद यहूदियों और अन्यजातियों में से आये कुरिन्थियों के विश्वासियों को लिखता है कि, केवल विशेष समूह के लोगों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त नहीं हुआ था, वरन "हम सभी ने एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया" और वह देह मसीह की देह है। जिसमें सारे प्रेरित व संसार के सारे यहूदी शामिल है, चाहे वे यहूदियों में से हो या अन्यजातियों में से(1 कुरिन्थियों 12:12-13)। अत: जब लोग यीशु मसीह में विश्वास करने लगे, तो एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए उनका बपतिस्मा हो गया(इफिसियों 1:22-23)।वे मसीह की आत्मिक देह का हिस्सा हो गये,अर्थात सार्वभौमिक मसीही कलीसिया का हिस्सा हो गये। उस समय से लेकर विश्वासी जन अकेले नहीं हैं, परन्तु वे एक नये समाज का हिस्सा हैं।

(3)पवित्र आत्मा से बपतिस्मा का अर्थ पवित्र आत्मा को प्राप्त करना है।

जिसके द्वारा पवित्र आत्मा विश्वासी के जीवन में वास करता तथा कार्य करता है।

पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के द्वारा पवित्र आत्मा विश्वासी के जीवन में (यूहन्ना 7:37-39; 1कुरिन्थियों 6:19-20) तथा कलीसिया अर्थात मसीह की देह में वास करने लगता है (यूहन्ना 14:16-17; इफिसियों 2:19-22)। उनमें रहने वाला पवित्र आत्मा वास्तव में स्वयं 'मसीह से कम नहीं है'। जिस किसी ने आत्मा पाया है वह मसीही है। लेकिन जिस में परमेश्वर का आत्मा नहीं वह मसीही नहीं हैं (रोमियों 8:9-10; 1 कुरिन्थियों 12:3)। पवित्र आत्मा मसीह द्वारा किये गये सम्पूर्ण उद्धार कार्य का मसीही विश्वासी के जीवन में भरपूरी से इस्तेमाल करता है। समय बीतने पर यह प्रमाणित हो जाता है कि पवित्र आत्मा मसीहियों को विभिन्न प्रकार के वरदान देता है जिसकी सहायता से उन्हें दूसरे मसीहियों की सेवा करनी चाहिए (1पतरस 4:10-11),कलीसिया या मसीह की देह की स्थापना करनी चाहिए (1कुरिन्थियों 4:12:7; 14:12)सेवा के विभिन्न काम करने के लिए मसीहियों को तैयार करना चाहिए (इफिसियों 4:11-13)तथा परमेश्वर को महिमा देनी चाहिए (1पतरस 4:11)।

साराशं। पवित्र आत्मा को बपतिस्मा तब होता है जब लोग पहली बार यीशु मसीह विश्वास करते हैं, और जिसका परिणाम नया जन्म या उद्धार, मसीह व मसीही कलीसिया का सम्बन्ध, पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर का उनके जीवन में निवास और उनका शुद्धिकरण, और सेवा के लिए आत्मिक वरदानों द्वारा भरा जाना होता है।

3. पवित्र आत्मा से भरे जाने के समय घटनाओं का क्रम।

(1) ऐसा क्यों है कि यीशु मसीह के 120 शिष्यों को विश्वास करने के काफी लम्बे समयान्तराल के बाद आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त हुआ।

प्रेरितों 2:1-4, 33;यूहन्ना 7:37-39;(यूहन्ना 12:23-24;यूहन्ना 16:7; लूका 24:39;परितों 1:5) **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। क्यों यीशु मसीह के 120 शिष्यों को विश्वास करने के काफी लम्बे समयान्तराल के बाद आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त हुआ?

ध्यान दें। प्रेरितों 2:1-4 में एक अनोखी ऐतिहासिक घटना को वर्णन किया गया है लेकिन वहां पर विश्वव्यापी मसीही शिक्षा के बारे में नहीं बताया गया है।

यीशु मसीह के प्रथम 120 चेले (प्रेरितों के काम 1:15) पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने से पहले ही विश्वासी थे। उन्होंने उसी घड़ी पवित्र आत्मा नहीं पाया जब उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया क्योंकि उस समय यीशु मसीह उनके साथ इस धरती पर ही था। उन्हें पवित्र आत्मा पाने के लिए उस दिन तक इन्तज़ार करना था जब तक कि यीशु अपनी महिमा में (स्वर्ग)नहीं उठा लिया गया। उन्हें उस दिन तक इन्तजार करना जरूरी था जब यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया गया,वह मुर्दों में से जी उठा, स्वर्ग में उठा लिया गया और स्वर्ग में अपने सिंहासन पर विराजमान हो गया, उसके बाद ही उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलना था जो कि वास्तव में यीशु मसीह का आत्मा था।

यूहन्ना 7:37-39 और 16:7 में यीशु आने वाले पिन्तेकुस्त के दिन के बारे में बताते हैं। पिन्तेकुस्त के पहले दिन में पवित्र आत्मा के उतरने को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहा जाता है(प्रेरितों 1:5; 11:14-18)! अत: पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना और लोगों द्वारा उसे पाने का काम यीशु मसीह के क्रूस पर मारे जाने, उसके पुनरूत्थान, उसके स्वर्ग पर उठा लिये जाने और उसके सिहांसन पर विराजमान होने के बाद ही हुआ। यह घटना परमेश्वर द्वारा प्रदान किये गये उद्धार की इतिहास का एक भाग है, अत: हमें एक अनोखी घटना कह सकते हैं। प्रेरितों 2:1-4 से हमें इस बात की शिक्षा प्राप्त नहीं होगी कब लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं।

क्योंकि यीशु मसीह पहले ही अपनी महिमा को प्राप्त कर चुकें हैं, और जितने लोग यीशु मसीह को स्वीकार करते हैं वे तुरन्त ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लेते हैं और उन्हें यीशु के चेलों के समान इन्तज़ार करने की जरूरत नहीं होती। पिन्तेकुस्त के बाद से, विश्वासियों को तुरन्त पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल जाता है अर्थात वे उसी समय पवित्र आत्मा पा लेते हैं। रोमियों 8:9-10 में स्पष्ट तौर से सिखाया गया है कि जिसके पास पवित्र आत्मा नहीं है(परमेश्वर की आत्मा या मसीह की आत्मा)वे मसीह के नहीं हैं अर्थात वे मसीही नहीं हैं। इसलिए यीशु मसीह पर विश्वास करने या यीशु मसीह को ग्रहण करने को (यूहन्ना 1:12) पवित्र आत्मा को ग्रहण करने से अलग नहीं किया जा सकता(यूहन्ना 1:13; इफिसियों 1513-14)। मसीही लोग एक परमेश्वर, पिता,पुत्र, और पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं। एक परमेश्वर को हम टुकड़ां में प्राप्त नहीं किया जाता।

(2) सामरी विश्वासियों विश्वास करने के कुछ दिनों के पश्चात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा क्यों मिला।

प्रेरितों 8:12-17;मत्ती 16:18-19; (मत्ती 18:18; इफिसियों 2:19-20)

खोजें व चर्चा करें। सामरी विश्वासियों विश्वास करने के कुछ दिनों क पश्चात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा क्यों मिला?

ध्यान दें। प्रेरितों 8:12-17 में एक अनोखी ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया गया है लेकिन कोई विश्वव्यापी मसीही शिक्षा के बारे में नहीं बताया गया है।

सामरिया के लोग न तो शुद्ध यहूदी थे और न ही अन्यजाति। वे एक मिश्रित जाति में से थे जिन्हें यहूदियों का शत्रु माना जाता था। पुराने नियम के समय में वे लोग परमेश्वर के लोगों का हिस्सा नहीं थे। यहूदियों और सामरियों के बीच आपसी परम्परागत लड़ाई को देखते हुए यह कल्पना करना असम्भव लगता है कि सामरिया के लोगों को भी उद्धार की आशीष मिल सकती है और वे भी अन्ततः परमेश्वर के लोग कहला सकते हैं। इसी प्रकार की दुश्मनी यहूदियों और अन्यजातियों में भी थी(प्रेरितों 10 व 11 अध्याय)। सामरियों ने सुसमाचार को सुना और फिलिप्पुस की सेवा द्वारा यीशु मसीह पर विश्वास करने लगे,जो एक प्रचारक तो था परन्तु वह यीशु के प्रेरितों में से एक नहीं था। सामरिया के इन लोगों तब तक पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के लिए इन्तजार करना था जब तक कि यीशु मसीही के शिष्य अर्थात प्रेरित उनके लिए परमेश्वर के राज्य के दरवाजे को नहीं खोलते।

परमेश्वर के राज्य के द्वार को खोलने का अधिकार यीशु मसीह द्वारा अपने चेलों अर्थात 12 प्रेरितों को दिया गया था। यीशु ने अपनी कलीसिया को साधारण विश्वासियों पर नहीं वरन अपने चुने प्रेरितों पर स्थापित किया था (मत्ती 16:18;18:18; इफिसियों 2:20; यूहन्ना 20:21-23;प्रकाशितवाक्य 21:14)।

केवल परमेश्वर ही अपने लोगों को अपने राज्य में खींच कर लाता है (कुलुस्सियों 1:13-14)। और यीशु मसीह के बारह प्रेरित(विशेषकर के प्रेरित पतरस)परमेश्वर के वे माध्यम या औजार बन गये जिनके हाथों में परमेश्वर न केवल यीशु मसीह में यहूदी विश्वासियों को(प्रेरितों 2:37-41),वरन यीशु मसीह में विश्वास करने वाले पहले सामरियों को (सामरी लोग आधे यहूदी थे)(प्रेरितों 8:12-17) और अन्यजातियों में से प्रथम विश्वासियों को (गैर यहूदियों को)(परितों 10:34-48)को परमेश्वर के राज्य में आने के लिए छोड़ सके। यीशु के बारह प्रेरित व ऐतिहासिक मसीही चर्च की बुनियाद डालने के लिए उनके अधिकार के साथ किये गये कार्य परमेश्वर के उद्धार के इतिहास का एक अनोखा भाग थे और वह घटना भी अनोखी व ऐतिहासिक घटना थी। प्रेरितो 8: 12-17 में भी हम आज की तारीख में यह शिक्षा नहीं पा सकते कि कब लोगों ने पवित्र आत्मा बपतिस्मा प्राप्त किया था।

(3) आज विश्वासी लोग विश्वास करते ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लेते हैं।

इफिसियों 1:13-14 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। बाइबल उस समय के बारे में क्या शिक्षा देती है जब लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है?

ध्यान दें। प्रेरितों के काम में यहूदियों(प्रेरितों 2),सामरियों(प्रेरितों 8) और अन्याजियों(प्रेरितों 10)(प्रेरितों 1:8 से तुलना करें) में मसीही कलीसिया प्रारम्भ करने की ऐतिहासिक घटना का वर्णन करने के बाद, बाइबल हमें यह सिद्धान्त सिखाती है कि जब कभी लोग सुसमाचार को सुनते और उस पर विश्वास करते हैं तो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा होता है। यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोग तुरन्त ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर लेते हैं, इसमें किसी अगुवे या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा मध्यस्थता करने की कोई आवश्यकता नहीं होती(प्रेरितों 2:38-39)।

4.पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने पर प्रगट होने वाले चिन्ह।

(1) पवित्र आत्मा से जुड़े चिन्हों के बारें में बाइबल क्या वर्णन करती है।

खोजें व चर्चा करें। पवित्र आत्मा से जुड़े चिन्हों के बारें में बाइबल क्या बताती है?

बाइबल हमें आंधी, आग, और अन्यान्य भाषा बोलने जैसे चिन्हों के बारे में बताती है।

प्रेरितों 2:1-11; प्रेरितों 10:46 को **पढ़ें।**

ध्यान दें। बाइबल, उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर के इतिहास के साथ इस बात को जोड़ती है कि जब प्रभु यीशु के चेलों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया,उन्होंने प्रचण्ड आंधी की सनसनाहट को सुना जो स्वर्ग से उतरी और पूरा घर उससे भर गया। उन्होंन आग की सी फटती हुई जीभों को देखा जो सभी चुनें हुए चेलों पर आ ठहरीं। और वे सब आत्मा से भरकर इस संसार की अन्यान्य भाषा में बोलने लगे, और परमेश्वर के अद्‌भुत कामों की गवाही देने लगे।

पिन्तेकुस्त के पहले दिन ही आंधी और आग का चिन्ह उन लोगों के लिए वास्तव में अनोखा था-क्योंकि उन्होंने कभी अपने जीवन में ऐसा अनुभव नहीं किया था। आज की तारीख में अन्यान्य भाषा का बोला जाना जारी रह सकता है, लेकिन बाइबल हमें यह शिक्षा नहीं देती है कि ऐसा आगे भी होता रहेगा या होना चाहिए। संसार में अन्यान्य भाषा (मनुष्यों की भाषाआं)में बात करना निश्चय ही अन्यान्य भाषा (स्वर्गदूतों की बोली) से अलग था,जिसका अनुभव कुरिन्थियों की कलीसिया में किया गया (1 कुरिन्थियों 13:1)।

बाइबल बताती है कि मसीही समाज में इस चिन्ह को एक सामान्य चिन्ह के तौर पर देखा जाने लगा।

प्रेरितों 2:37-47 **पढ़े।**

ध्यान दें। बाइबल, उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर के इतिहास के साथ इस बात को जोड़ती है कि जब यहूदियों में प्रथम चेलों ने पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था तब उन्होंने अपने आपको प्रेरितों से शिक्षा पाने,संगति रखने, रोटी तोड़ने, प्राथना करने के लिए समर्पित किया। दूसरे शब्दों में, इस तरह से मण्डली का निर्माण हुआ।

यह पूर्वधारणा कि 3000 यहूदियों ने भी अन्यान्य भाषा में बात की व्यवस्था से मेल नहीं खाती क्योंकि बाइबल इस बारे में कोई बात नहीं करती और निश्चय ही लूका इस महत्वपूर्ण तथ्य का लिखना नहीं भूल सकता। बाइबल में आत्मा के बपतिस्में के बाद जो सामान्य व साधारण चिन्ह सामने आया वह मण्डलियों या कलीसियाओं को सक्रिय होना था (प्रेरितों 2:47;4:4; 5:14;6:7; 8:12; 11:21;13:48;14:21-23 इत्यादि)

(2) बाइबल पवित्र आत्मा के बपतिस्में से जुड़े चिन्हों के बारे में क्या कहती है।

खोजें व चर्चा करें। बाइबल पवित्र आत्मा के बपतिस्में से जुड़े चिन्हों के बारे में क्या कहती है?

ध्यान दें। बाइबल हमें सिखाती है कि हर एक मसीही के उद्धार प्राप्त व्यक्तिगत जीवन में,पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद पवित्र आत्मा के तीन प्रत्यक्ष चिन्ह प्रगट होने चाहिए:

वह मसीह की देह का हिस्सा बनना चाहिए, जिसका अर्थ कलीसिया या मण्डली का भाग होना है(1कुरिन्थियों 12:12-27)

उसे पापमय स्वभाव को मारकर, आत्मा के फल लाने वाला होना चाहिए, खासतौर पर प्रेम!(गलातियों 5:22-23)

उसे उन आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल करते हुए मसीह की सेवा करनी चाहिए जो पवित्र आत्मा ने उन्हें दिये हैं। बाइबल में विशेष तौर से यह नहीं बताया गया है कि कब या किस समय मसीही के जीवन में आत्मिक वरदान प्रगट होगें। यह सिद्धता की दिशा में मसीही जन की आत्मिक बढ़ौतरी और कलीसिया की सेवाओं के प्रति उसके समपर्ण पर निर्भर करता है(1कुरिन्थियों 12:3-7,11,30-31;13:1)

ख पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना।

यदि पवित्र आत्मा मात्र एक ऐसी शक्ति होती जिसे कोई व्यक्ति किसी निश्चित परिमाप में प्राप्त कर सकता तो, मसीहीयों का पवित्र आत्मा पाने के सम्बन्ध में प्रबल रवैय्या होता कि "मैं पवित्र आत्मा को ज्यादा से ज्यादा किस प्रकार प्राप्त कर सकता हूँ (अर्थात ज्यादा से ज्यादा उसकी सामर्थ्य को)"। लेकिन पवित्र आत्मा तो एक व्यक्ति होने के कारण, आप पर कब्जा करके आपको किसी खास परिमाप में प्रभावित कर सकता है, इसलिए मसीहियों का पवित्र आत्मा के प्रति प्रबल रवैय्या यह होना चाहिए कि,"कि पवित्र आत्मा मुझ पर किस तरह ज्यादा से ज़्यादा कब्ज़ा कर सकता है?","पवित्र आत्मा कैसे मेरे जीवन को अधिक प्रभावित कर सकता है?" एक व्यक्ति कभी परमेश्वर पर (यीशु मसीह या पवित्र आत्मा पर)कब्ज़ा नहीं कर सकता परन्तु परमेश्वर (यीशु मसीह, पवित्र आत्मा)एक मसीही जन पर कब्ज़ा या अधिकार करना चाहता है, और वह ऐसा कर सकता है और करेगा बशर्ता मैं उसे ऐसा करने की स्वतन्त्रता प्रदान करूं।

परमेश्वर पवित्र आत्मा से मेरा सम्बन्ध महज शक्ति या चमत्कारों तक ही सीमित नहीं है, वरन यह मामला पवित्र आत्मा के मेरे जीवन में वास करने के माध्यम से यीशु मसीह द्वारा मेरे जीवन पर पूरी तरह से प्रभुता करने का है! इसलिए मेरा प्रमुख प्रश्न होना चाहिए कि पवित्र आत्मा के मेरे जीवन में वास करने के द्वारा किस प्रकार मेरे जीवन को प्रभावित कर सकते तथा मेरे जीवन को दृढ़ बना सकते हैं।" पवित्र आत्मा से भरे जाने का अर्थ है कि परमेश्वर (यीशु मसीह या पवित्र आत्मा) मुझ पर कब्ज़ा,प्रभ्ता करता है और बाइबल के द्वारा मेरी अगुवाई करता है, और मेरे जीवन व सेवाकाई को फलवन्त बनाता और मुझे प्रभावित करके

अपने अधीन होने में मेरी सहायता करता है! आत्मा से परिपूर्ण मसीही पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित व्यक्ति होता है! पूर्ण रूप से समर्पित व्यक्ति पवित्र आत्मा से भरा हुआ व्यक्ति होता है।

1.पवित्र आत्मा से भरे जाने जाने की प्रतिज्ञा।

यीशु ने विश्वासियों से यह प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा एक जीवन के जल के नदियों के समान होगा जो उनके भीतर से बह निकलेगा(यूहन्ना 7:37-39)। उसने विशेषकर के अपने चेलों (प्रेरितों से) से प्रतिज्ञा की कि वे सामर्थ्य पाएंगे और यहूदियों,सामरियों और अन्यजातियों और जगत के छोर तक उसके गवाह होगें(प्रेरितों 1:8)। पवित्र आत्मा हमें धरती पर सेवा करने के लिए स्वर्ग की शक्ति प्रदान करता है!

2. पवित्र आत्मा से भरे जाने की प्रतिज्ञा का पूर्ण होना।

बाइबल बताती है कि जब लोगों ने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया तो बहुत से भिन्न प्रकार के प्रगटिकरण सामने आये। बाइबल में बहुत से ऐसे प्रमाण हैं कि जब लोगों ने पवित्र आत्मा पाया तो लोगों के जीवन में उद्धार के इतिहास से सम्बन्धित कैसे कैसे काम हुए। परन्तु ये घटनाएं या उनके परिणाम आज की मण्डली में आवश्यक तौर पर लागू होने वाले या लागू किये जाने वाले नियम नहीं है।

बाइबल, पवित्र आत्मा पाने के बाद प्रगट हुए भिन्न भिन्न प्रमाणों या प्रगटीकरणों के बारे में बताती है:

- लूका 1:41-43। एलिजाबेथ को विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ कि जो बच्चा मरियम के गर्भ में ह, वह मसीह है।
- लूका 1:67-79। जर्कयाह ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के भविष्य के बारे में भविष्यद्वाणी की।
- लूका 4:1-2। यीशु मसीह ने शैतान की परिक्षाओं पर विजय प्राप्त की।
- प्रेरितों 2:4 यीशु के 120 चेलों ने जब पवित्र आत्मा को बपतिस्मा पाया तो वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर अन्यान्य भाषाओं में परमेश्वर के अद्‌भुत कामों के बारे भविष्यवाणी करने लगे।
- प्रेरितों 4:8 पतरस को तुरन्त बोलने की हिम्मत और प्रेरणा मिली(मरकुस 3:11)-प्रेरितों 4:31। चेलों को परमेश्वर के वचन बोलने का साहस व हिम्मत प्राप्त हुई।
- प्रेरितों 6:3,8-10। प्रथम डीकनों ने जब पवित्र आत्मा पाया तो उनमें आत्मा के फल लगे और वे अविश्वसनीय बुद्धि के साथ परमेश्वर का वचन प्रचार करने लगे। और स्तिफनुस को परमेश्वर की आत्मा के द्वारा अद्‌भुत चमत्कार करने की सामर्थ्य प्रदान की गयी।
- प्रेरितों 7:55 स्तिफनुस को मृत्युजंय मसीह को उसकी मसीह को उसकी महिमा में देखने की योग्यता प्राप्त हुई।
- प्रेरितों 9:17-22। पौलुस और अधिक सामर्थ्य में होकर प्रचार करता और शत्रुओं का सामना करता हुआ बाइबल से साबित करता रहा कि यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है।
- प्रेरितों 11:24. बरनाबास बहुत से लोगों को मसीह में ले आया।
- प्रेरितों 13:9-11 पौलुस को जादूटोना करने वालों व झूठे भविष्यद्वक्ताओं पर परमेश्वर के न्याय को घोषित करने का अधिकार मिला।
- प्रेरितों 13:49-52. नये मसीही लोग सताव के बावजूद भी आनन्दित थे।

3. पवित्र आत्मा से भरे जाने के विषय में शिक्षा।

इफिसियों 5:15-21 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। बाइबल के अनुसार जब लोग पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाते हैं तो उनके क्या लक्षण होते हैं?

बाइबल स्पष्ट तौर पर *सिखाती* है कि जब मसीही लोग पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो तो उनके क्या लक्षण होते हैं: इस अनुच्छेद में ध्यान देने योग्य तीन बाते हैं: मुख्य क्रिया, आधारित क्रिया व उनका सयुंक्त होना या जोड़ा जाना।

(1) मुख्य क्रिया एक आज्ञा है जो आज भी लागू होती है।

मुख्य क्रिया को हम पद 18 में पाते हैं,"आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ"।

- मुख्य क्रिया एक अनिवार्य कार्य के रूप में प्रगट की गयी है जो दर्शाती है कि किया जाने वाला काम एक आदेश या आज्ञा है। बाइबल बताती है कि एक मसीही को पवित्र आत्मा से भरे जाने की आज्ञा दी गयी है। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना कोई विकल्प नहीं वरन एक दायित्व है। जिसे हर एक मसीही को अवश्य पूरा करना चाहिए।
- मुख्य क्रिया वर्तमान नियमित काल में दी गयी है जो यह दर्शाती है कि यह काम लगातार किया जाने वाला और आज भी मान्य है। बाइबल बताती है कि मसीहियों को लगातार व बार बार आत्मा से भरा जाना चाहिए ।
- मुख्य क्रिया निष्क्रिय अवस्था है और यह दर्शाती है कि कार्य परमेश्वर पर निर्भर करता है मसीहियों पर नहीं। आत्मा से भरने का काम केवल परमेश्वर ही कर सकता है। कोई भी मनुष्य, चाहे वह अगुवा हो या अधिकाई से वरदान पाया हुआ व्यक्ति हो यह काम नहीं कर सकता। यह कार्य केवल सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर ही कर सकते हैं और उन्होंने ऐसा करने का वायदा किया है।

अत: बाइबल बताती है कि आत्मा से परिपूर्ण जीवन को साधारण मसीही जीवन कहा जाता है।

(2) आधारित क्रियाएं विशेषण हैं जो मुख्य क्रियाओं पर निर्भर होती है।

19-21 वचन में पाये जाने वाले पांच विशेषण वे वर्तमान विशेषण हैं जो मुख्य क्रिया पर आधारित हैं मुख्य क्रिया के साथ समयकालीन कामों को प्रकट करते हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य है और जो नियमित तौर पर व बार बार मान्य हैं। वे विशेषण हैं: "बोलना", "गाना","संगीत बनाना" "धन्यवाद देना" तथा 'समर्पित होना। बाइबल बताती हैं कि आत्मा से परिपूर्ण मसीहियों में निम्नलिखित विशेषताएं होती है:

- आत्मा से परिपूर्ण मसीही दूसरे मसीहियों के साथ मिलकर परमेश्वर की महिमा करता है। वह कभी उन पार्टियों का हिस्सा नहीं बनेगा जो शराब, गदर और नैतिक भ्रष्टाचार से भरपूर हो(इफिसियों 5:3-13; 1 पतरस 4:3-4)। इसके बजाय वह,दूसरे मसीहियों के साथ मिलकर बातचीत करेगा,गीत गायेगा और संगीत बजाएगा(सच कहें तो, वह संगीत के वाद्यों के साथ जुगलबन्दी का मज़ा उठाएगा)। इस प्रकार की मसीही सभाओं का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और एक दूसरे की उन्नति करना है। यह आत्मा के फल *आनन्द* का उदाहरण है(गलातियों 5:22)
- आत्मा से भरे हुऐ मसीही को अपनी बोली पर संयम होता है(याकूब 3:1-12; भजन 141:3)। वह कभी लोगों व परिस्थितियों के प्रति नकारात्मक,आलोचनात्मक और दोषारोपण करने वाला नहीं होगा। वह कभी असन्तुष्ट या कृतघ्न होकर शिकायत करने या बहस करने वाला नहों होगा(फिलिप्पियों 2:14)। इसकी बजाय वह सन्तुष्ट(फिलिप्पियों 4:11;1तीमुथीयुस 6:6)और सारी परिस्थितियों में परमेश्वर का धन्यवाद देन वाला होगा(1 थिस्लुनिकियों 5:18)। यह आत्मा के फल *संयम* का एक उदाहरण है(गलातियों 5:23; 1 कुरिन्थियों 7::9;9:24-27)।
- आत्मा से भरे मसीही अधीन होते हैं। वह कभी घमण्डी नहीं होगा वह कभी अकेला राही या स्वावलम्बी नहीं होगा। वह कभी असहयोग करने वाला, फूटडालने वाला,स्वार्थी या आत्म केन्द्रित जन नहीं होगा। बल्कि, वह अधीन व समर्पित होगा। मसीही जन हमेशा अपने आप को छोटा बनाकर रखेगा और वह हमेशा उन क्षेत्रों पर सेवा करने के लिए तैयार रहेगा जहां कोई और सेवा निभाने के लिए जाना न चाहता हो(यूहन्ना 13:1-17)। वह हमेशा दूसरों की भलाई सोचने वाला जन होगा(फिलिप्पियों 2:4)। वह अपने से बढ़कर दूसरों का आदर करेगा(रोमियों 12:10)। वह हमेशा मैत्रीभाव रखने वाला,शिष्ट, सज्जन,नम्र और ध्यान रखने वाला जन होगा। यह आत्मा के फल नम्रता का एक उदाहरण है (गलातियों 5:23)
- अत: बाइबल बताती है कि आत्मा की परिपूर्णता से मसीही जीवन आकर्षक हो जाता है।

(3) पद 17 से 18 तथा 15 से 17 वचन संयोग से आत्मा से परिपूर्ण जीवन से जुड़े हैं ।

नये नियम की मूल ग्रीक भाषा में पद 17 व 18 में "और " एक संयोजक है। अत: आत्मा से परिपूर्ण मसीही में वे विशेषताएं पायी जाएंगी जो 15 से 17 वचन में लिखी हुई हैं:

- मसीही जन हमेशा अपने व्यवहार को लेकर सर्तक रहेगा। वह अपनी मर्जी से चलने वाला व्यक्ति होने से बचेगा, जो कहता है कि उसे परमश्वर की जरूरत ही नहीं है(न्यायियों 21:25)। इसक बजाय, उसके जीवन के हर क्षेत्र में वह यह

दिखाने का प्रयास करेगा कि उसने अपनी पुरानी जीवन शैली को त्याग दिया है और उसने पवित्र व धार्मिक जीवन शैली को अपना लिया है और उसमें ही बढ़ रहा है।

- आत्मा से परिपूर्ण मसीही व्यक्ति में व्यवहारिक समझ होगी। वह ऊँचे से ऊँचे लक्ष्य को हासिल करने के लिए हर भरसक प्रयास करेगा। वह अपने बाइबल के ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में इस्तेमाल इस तरह करेगा जिससे परमेश्वर के नाम को महिमा मिल (इफिसियों 5:15)।
- आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति परमेश्वर द्वारा दिये गये प्रत्येक अवसर का इस्तेमाल करेगा(इफिसियों 5:16)
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही नियमित तौर पर परमेश्वर की इच्छा को जानने और उसे मानने का प्रयास करेगा, जैसा कि बाइबल में लिखा है(इफिसियों 5: 17)। वह लगातार खोजता रहेगा कि परमेश्वर किन बातों से प्रसन्न होता है(इफिसियों 5:10)।

4. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का अभ्यास।

सिखाएं। पहली बार पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को सुसमाचार सुनना और यीशु मसीह पर विश्वास करना जरूरी है। (इफिसियों 1:13)

प्रश्न. लेकिन मसीही जन तब क्या करें जब वे पवित्र आत्मा से पूण महसूस न करें, अर्थात जब उन्हें ऐसा महसूस न हो कि उनका जीवन यीशु मसीह की प्रभुता के प्रति समर्पित है?

(1) आत्मा से परिपूर्ण जीवन को बहाल करें।

1 यूहन्ना 1:9; इफिसियों 4:25-32; 5:8-11; याकूब 4:5-10 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। आत्मा से परिपूर्ण जीवन को बहाल करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

आप ऐसा क्या करें कि पवित्र आत्मा फिर से आपके जीवन पर नियन्त्रण करके उसे चलाये?

ध्यान दें। किसी भी प्रकार का पाप पवित्र आत्मा को शोकित करता और परमेश्वर और आपके बीच सम्बन्ध में अलगाव को उत्पन्न करता है(यशायाह 59:1-2)। फिर भी,जब आप पाप करते हैं, तब पवित्र आत्मा आपको नहीं छोड़ता है क्योंकि आप पहले से ही धर्मी ठहराए जा चुकें हैं और यीशु मसीह ने यह प्रतिज्ञा की है कि पवित्र आत्मा तुम्हारे साथ होगा और तुम में होगा(यूहन्ना 14:16-17)।

लेकिन परमेश्वर और आपके बीच सम्बन्ध में गड़बड़ी को सुधारने क लिए तथा पुन: पवित्र आत्मा के कार्यों को अपने जीवन में अनुभव करने के लिए,आपको अपने जीवन में निम्नलिखित काम करने चाहिए:

- जितने पापों के बारे में आपको बोध है उनको अंगीकार करें और परमेश्वर की क्षमा को प्राप्त करें और उस पर विश्वास करें(1यूहन्ना 1:9)।
- अपने जीवन में सारे पापमय गतिविधियों (नीतिवचन 28:13)और अपने जीवन में गलत सम्बन्धों से रिश्ता तोड़ दें(1कुरिन्थियों 15:33)। हर प्रकार के पाप से दूर रहें।
- अगर आपने किसी के प्रति कोई अपराध किया है तो उनसे क्षमा मांगे(मत्ती 5:23-24; याकूब 5:16)। जितना सम्भव हो आपस में प्रत्यर्पण कर लें, मसलों को सुलझा लें और सबके साथ शान्ति बनाकर रखें(रोमियो 12:17)। इस पहलू को दैनिक वार्तालाप कहा जाता है। यह प्रेम का एक भाव है(लूका 6:27-28)।
- अपने आप को परमेश्वर के हाथों में समर्पित या अधीन कर दें, उसकी आज्ञाओं का पालन करें और उसी के अनुसार अपना दैनिक जीवन जियें(याकूब 4:5-10)। यह भी प्रेम प्रकट करने का एक तरीका है(यूहन्ना 14:21.23)।

(2) आत्मा से परिपूर्ण जीवन के लिए प्रार्थना करें।

फिलिप्पियों 4:6-7; मत्ती 7:7-11; लूका 11:9-13 को **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। आप यीशु मसीह से अपने लिए क्या करने के लिए कह सकते हैं?

ध्यान दें। हर एक मसीही जन परमेश्वर से आत्मा से परिपूर्ण जीवन की सच्चाई व उसके प्रत्येक पहलू के बारे में पूछ सकता है।

- आत्मा के नियन्त्रण के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपके जीवन में वास करके एक बार फिर से आपके जीवन पर अपना नियन्त्रण या कब्ज़ा कर ले। (गलातियों 5:18)

- आत्मा के फलों के पाने के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपके जीवन में एक नया व ताज़ा काम करें तथा आपके विचारों, स्वभाव, आदतों,चरित्र को अपने फलों के द्वारा बदल दे(गलातियों 5:22-23)।
- आत्मा के वरदानों के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा अपने आत्मिक वरदानों के द्वारा आपको किसी विशेष सेवा के लिए तैयार करें(इफिसियों 4:7,11-12)। तथापि, आत्मिक वरदान देना हमेशा सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर के हाथ में है (1कुरिन्थियों 12:11)!

(3) आत्मा से परिपूर्ण जीवन बनाकर रखें।

खोजें और चर्चा करें। आप किस प्रकार से आत्मा से परिपूर्ण जीवन को कायम रखते हैं?

ध्यान दें। आत्मा से परिपूर्ण जीवन लगातार शिक्षा प्राप्त करने से कायम रहता है।

पवित्र आत्मा शिष्यता के हर पहलू के लिए अनिवार्य है:

- मसीह का आत्मा आपके जीवन को केन्द्र बिन्दु है(यूहन्ना 16:14)। आत्मा महिमित मसीह को प्रगट करता है। वह आपके यीशु मसीह व कलीसिया के जीवन को आपके जीवन का मुख्य केन्द्र बना देता है।
- आत्मा और परमेश्वर का वचन (इफिसियों 6:17)। जिस तलवार को इस्तेमाल परमेश्वर का आत्मा करता है वह परमेश्वर का वचन है। वह आपको बाइबल में लिखे हुए वचनों को याद दिलाता है, उनका मतलब समझाता है और उन्हें आपके जीवन में लागू करता हैं।
- आत्मा और प्रार्थना (रोमियों 8:26-27; इफिसियों 6:18)। पवित्र आत्मा प्रार्थना करने वरन सही रीति से प्रार्थना करने में सहायता करता है।
- पवित्र आत्मा और संगति(रोमियों 5:5)।पवित्र आत्मा संगति करने के लिए शान्ति व प्रेम प्रदान करता है।
- पवित्र आत्मा और फल लाना(लूका 12:11-12; 1 कुरिन्थियों 12:11)। पवित्र आत्मा गवाही देने के लिए शब्द व सेवा करने के लिए वरदान देता हैं।
- आत्मा और आज्ञाकारिता(प्रेरितों के काम 1:8; 5:32; 1 पतरस 1:2)। पवित्र आत्मा,परमेश्वर द्वारा हमें बताए गये कार्यों को करने के लिए हमें शक्ति प्रदान करता है।
- साराशं। पवित्र आत्मा से भरा जाना एक साधारण मसीही जीवन को प्रगट करता है अर्थात ऐसे जीवन जिसे हम बार बार पवित्र आत्मा की नियन्त्रण में लाते हैं, जिसका मतलब है एक ऐसा जीवन जिसे बार-बार प्रभु यीशु मसीह की प्रभुता या अधिकार के अधीन लाया गया हो।
- जब पवित्र आत्मा उस व्यक्ति के विचार,स्वभाव,आदतों या चरित्र को पवित्र आत्मा के फलों के द्वारा बदलता है, समय के बीतने पर उस व्यक्ति का नवीनीकरण प्रकट होने लगता है।
- जब पवित्र आत्मा परमेश्वर द्वारा दिये गये काम को पूरा करने के लिए एक उपयुक्त आत्मिक वरदान प्रदान करता है, तब प्रगट हो जाता है कि वह उस व्यक्ति को सेवा के लिए तैयार कर रहा है।

ग. पवित्र आत्मा के फल

रोमियों 8:9-16; गलातियों 5:13-25।

खोजें व चर्चा करें। किस प्रकार आपके भीतर पापमय स्वभाव की उपस्थिति या पवित्र आत्मा की उपस्थिति प्रगट होती है?

1. पापमय स्वभाव का प्रगटीकरण।

हमारे भीतर विद्यमान पापमय स्वभाव हमारे शरीर के कामों जैसे यौन अनैतिकता की, मूर्तिपूजा या किसी विचारधारा की अति, और सामाजिक पाप जैसे स्वार्थी महत्वाकाक्षाएं और झगड़े।

2. पवित्र आत्मा का प्रगटीकरण।

पवित्र का वास करना आत्मा के फलां से प्रगट होता है। पवित्र आत्मा की उपस्थिति बुनियादी आत्मिक गुणों में प्रगट होते हैं, जैसे प्रेम,आनन्द और शान्ति; लेकिन ये सब सामाजिक रिश्तों में प्रगट होते हैं, जैसे धीरज, करूणा, भलाई, और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता, दूसरों के प्रति सज्जनता,तथा अपने में संयम रखना।

जब आप एक मसीही हैं, तो आप मसीह के हैं और यीशु मसीह का आत्मा आप में वास करता है। आप पापमय स्वभाव की अधीनता में रहने के लिए मजबूर नहीं हैं,वरन अब आपका कर्तव्य है कि आप अपने भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में होकर जीवन व्यतीत करें। पवित्र आत्मा पापमय स्वभाव के शत्रु है इसलिए वह उसे समाप्त करने में आपकी सहायता करेगा।

पवित्र आत्मा आपके भीतर प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास नम्रता और संयम उत्पन्न करेगा। पवित्र आत्मा आपकी उन मार्गों में अगुवाई करेगा जिनमें परमेश्वर आपको चलाना चाहता है। इस तरह से पवित्र आत्मा आपको चलाने वाली व प्रभावित करने वाली शक्ति बन जाता है और आप अधिक से अधिक उसके अधीन होकर उसके साथ सहयोग करते हैं।

अगले अध्याय में आत्मा के फल के सम्बन्ध में अध्ययन करें(मैनुएल 4, अध्याय 46 देखें)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी सभी बातों के आधार पर परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए समूह में छोटी प्रार्थना करें।

या समूह को दो दो या तीन के समूह में बांट लें और फिर सीखी गयी बातों के आधार पर प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मिलकर " पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाना व परिपूर्ण होना" की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: अय्यूब 38,39,40,41,व 42 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर में ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। गलातियों 5:13-26। शीर्षक: संसार में आत्मा के फल युद्ध। बाइबल अध्ययन में दिये गये पाँच कदमों को इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।